Vol 5 Issue 1 Feb 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume-5 | Issue-1 | Feb-2015
Available online at www.isrj.org

निराला के कथा साहित्य में विद्रोह, संघर्ष और परिवर्तन

ललिता रानी

सहायक प्राध्यापक हिन्दी , बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर स्नातकोत्तर ,महाविद्यालय, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

सारांश :– संवेदना के इतने संसार निराला में हैं कि यह देखकर आश्चर्य होता है कि जीवन के कठिनतम संघर्षों के बीच वे इतना कुछ कैसे कर सके। अन्तिम समय तक सर्जनरत रहे, जैसे व्यथा को भी उन्होंने कविता में ढाल दिया, अपना आत्मविस्तार करके। निराला की विद्रोही वृत्ति का प्रायः उल्लेख किया जाता है। श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' अपने समय में ही गाथा बन गए। उत्तर-प्रदेश के पिछड़े इलाके बैसवाड़ा में निर्धन किसान-परिवार में जन्मे निराला की संघर्ष-कथा विचलित कर देने वाली है।

मुख्य शब्द – निराला, कथा साहित्य, विद्रोह, संघर्ष और परिवर्तन।

प्रस्तावना :–

निराला के कथा साहित्य में विद्रोह, संघर्ष और परिवर्तन प्रबल रूप से मुखरित हुआ है। निराला आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में समाजार्थिक, सांस्कृतिक बदलाव चाहते थे। जाति-पांति, वर्ण-आदर्श, वर्ग, आर्थिक विषमता निराला की दृष्टि में आधुनिक भारत में बाधक थे। हिन्दू समाज में जाति-व्यवस्था वाले वर्ण आदर्श को वे अभिशाप और मनुष्यता का कलंक मानते थे। सामाजिक रूढ़ियों, कर्मकाण्डी पाखंड पर प्रहार हेतु उन्होंने बहुत बार व्यक्तिगत स्तर पर ऐसे भी कार्य किये थे जो कुलीन वर्ग की दृष्टि में अवांछित, अनैतिक थे। उद्देश्य नैतिकता के सामंती स्तूपों का ध्वंस था। उनके काव्य-साहित्य का एक पक्ष अद्वैतवादी दर्शन है तो दूसरा सनातन रूढ़िमय धर्म के विरोध से संबंधित है। लिखते हैं-"हम साहित्य में अपनी बहुत दिनों की भूली हुई उस शक्ति को आमंत्रित करना चाहते हैं, जो अव्यक्त रूप से सब में व्यक्त अपनी ही आंखों से विश्व को देखती हुई, स्वतंत्र किरणों की तरह सब पर पड़ती हुई मधुर, उज्ज्वल, अम्लान, मृत्यु की तरह नवीन, जन्मदात्री सर्वशाखाओं की तरह अगणित प्रसाद से फैली हुई, प्रत्येक मूर्ति में चिरकमनीय है।"[1]

विश्लेषण –

'निरूपमा' में निराला ने एक ऐसी स्थिति का भी सृजन किया है, जो अनुकरणीय आदर्श कही जा सकती है, पर वह विश्वसनीय नहीं है। उपन्यास का केन्द्रीय पात्र, कृष्णकुमार या कुमार, लन्दन से भाषाविज्ञान की डी.लिट. डिग्री लेकर हिन्दुस्तान लौटता है पर बंगाली विद्वानों और अधिकारियें के पक्षपात के कारण उसे कलकत्ता विश्वविद्यालय में नौकरी नहीं मिलती, यहां तक कि लखनऊ विश्वविद्यालय में भी उसकी योग्यता की उपेक्षा कर एक बंगाली को ही लेक्चरर के पद पर नियुक्त कर लिया जाता है। इस प्रकार लन्दन की डी.लिट. डिग्री रहते हुए भी कुमार किसी कालेज में लेक्चरर का पद प्राप्त नहीं कर पाता और बेकारी की जिन्दगी व्यतीत करता है। इसके बाद वह जूता पॉलिश कर पेशा अपनाता है और अच्छी तरह से अपनी जीविका चलाने लगता है, यहां तक कि अपनी माँ को, जो गाँव में रहती है, पचास रुपये प्रति माह मनीआर्डर भी करने लगता है। १९३६ ई. में इस स्थिति का कल्पना भी नहीं की जा सकती। उस समय तो अपने देश की ही प्रथम श्रेणी की एम.ए. की डिग्री रखनेवाले को आसानी से किसी अच्छे कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी मिल जाती थी। वस्तुतः उपन्यास में निराला ने स्वयं को कुमार के चरित्र पर आरोपित कर दिया है। निराला उन दिनों, स्वयं साहित्यिक दृष्टि से सुयोग्य होने पर भी, जीविकोपार्जन में असफल हो रहे थे और कदाचित् यह भी सोच रहे थे कि साहित्य की रचना

करने से तो जूता पॉलिश करना अच्छा। उनकी इसी मानसिकता की अभिव्यक्ति कुमार के चरित्र में हुई है।

निराला धार्मिक पाखण्डों, सामंती मान्यताओं पर प्रहारसे नहीं चूकते। 'बिल्लेसुर बकरिहा' में बिल्लेसुर के माध्यम से अंध विश्वासों, सामंती मूल्यों पर करारी चोट है। 'निरूपमा' का कुमार समाज से लड़ता है। विरोध के सामने घुटना नहीं टेकता। विलायत पास होकर भी शहर में जूता पालिश करता है, परन्तु स्वाभिमान पर आंच नहीं आने देता। बिल्लेसुर और कुमार दोनों के व्यक्तित्व में कहीं न कहीं निराला हैं।[२]

प्रमिला विल्ला के अनुसार खड़ी बोली के जीवन की जवानी ढलने पर मैं खुद उनसे मिला, बातचीत की, मुझको बड़ी खुशी हुई हिन्दी बड़ी सजी-बजी थी। अब समझता हूँ कि उनकी बातों में फिसलन भरी थी, इरादा था, समझने वाला रपट कर गिर जाय।"३

एक समय था, जब साहित्य पर राजनीति का दबाव था, उस समय समाज में साहित्यिक वर्चस्व स्थापित करने के लिए निराला को लिखना पड़ा कि, "साहित्य दायरे से छूटकर ही साहित्य है .... साहित्य लोक से, सीमा से, प्रान्त से,. देश से, विश्व से ऊँचा उठा हुआ है, इसलिये वह लोकोत्तरानन्द दे सकता है।"[४]

"सनातन और अछूत" शीर्षक निबन्ध में निराला जी ने अछूत की सामाजिक व्यवस्था के प्रति अपनी मनोवैज्ञानिक धारणा व्यक्त करते हुये लिखते हैं-देश में नवीन युग, नवीन विचार, समभाव, समधर्म, एकाधिकार लाने और प्रापत करने के लिये देश के समझदार युवकों तथा उदार मनुष्यों को,. जहां तक हो सके, तैयार होकर इस अछूतोद्धार के सच्चे मार्ग पर आ जाना चाहिये। हमारी बहुत बड़ी सामाजिक दुर्बलता इस कार्य सेदूर होगी। किसी भी विरोधी शक्ति को इसके मुकाबले में ठहरने न देना चाहिये।"[५]

हिन्दी साहित्य के इतिहास में निराला गोस्वामी तुलसीदास के बाद सबसे बड़े तथा युगान्तकारी कवि माने गये हैं। निराला तुलसी से अधिक क्रान्तिकारी हैं। तुलसीदास वर्णाश्रमी नैतिकता के कायल थे, जबकि कबीर उनसे काफी पहले ही वर्णाश्रमी समाज की नैतिकता पर आघात कर चुके थे। भक्त कवियों ने आध्यात्मिकता के स्तर पर जातिगत भेदभाव को नकारा था; लौकिक व्यवहारों में नहीं। भेदभाव का विचार किसी न किसी रूप में सभी धर्मों में है, परन्तु हिन्दू धर्म में अमानवीयता के स्तर तक पहुंच गया है। यही कारण है कि 'भिखारी', 'महंगू महंगा रहा', 'झींगुर डट कर बोला', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता' जैसी कविताओं तथा 'देवी', 'चतुरी चमार', 'कुल्ली भाट' जैसी कृतियों में उन्होंने दलितों, उपेक्षितों, शोषितों का जोरदार पक्ष लिया है।

निराला की रचनानुभूति की संस्कृति के विन्यास का धरातल विराट है। 'नवजागरण' से चलकर वे 'राष्ट्रीय जागरण' में उतरते हैं। वहां राष्ट्रीय मुक्ति-आंदोलन की उन्नत प्रेरणाओं को आत्मसात करते हैं। फिर अवध के किसान-आन्दोलन से भी सक्रिय रूप में जुड़ते हैं। विवेकानन्दी नव्य वेदान्त से गुजरते हुए समाजवाद तक की वैचारिक यात्रा वे कुशलतापूर्वक तय करते हैं यहां एक बात स्पष्ट कर दूँ कि विवेकानन्दी नव्य वेदान्त और समाजवाद दोनों परस्पर विरोधी अवधारणाएँ नहीं हैं जैसा कि प्रचारित-प्रसारित किया जाता है। विवेकानन्द ने रूसी राज्य क्रान्ति से बहुत पहले 'समजावाद' के प्रति अपना विश्वास व्यक्त किया था। उन्होंने निर्भ्रान्त शब्दों में कहा था- "मैं एक समजवादी हूँ। इसलिए नहीं कि वह एक सर्वगुण सम्पन्न व्यवस्था है बल्कि इसलिए कि रोटी के अभाव की अपेक्षा आधी रोटी बेहतर होती है। अन्य व्यवस्थाओं की परीक्षा की जा चुकी है और उसमें अभाव ही अभाव पाये गये। अब इस (व्यवस्था) की भी परीक्षा कर जी जाए-अगर और किसी बात के लिए नहीं तो केवल नवीनता के लिए ही क्यों न सही।" ईश्वर और धर्म एक तरफ और रोटी की समस्या दूसरी तरफ। स्वामी विवेकानन्द का निर्णय अप्रतिम क्रान्तिकारी है - "मैं ऐसे धर्म या ईश्वर में विश्वास नहीं करता जो स्वर्ग में तो मुझे अनन्त आनन्द देगा पर इस जगत में मुझे रोटी भी नहीं दे सकता।"[६]

निराला समग्र साहित्स सच्चे अर्थों में विद्रोह, संघर्ष और परिवर्तन का साहित्य है। उनके साहित्य में भारत के राष्ट्रीय धर्म अद्वैतवाद का अपार पौरुष जागृत है और उसकी राष्ट्रीयता मातृवंदना का विराट् रूप लेकर देश की प्राकृतिक सुषमा, नारीत्व के प्रति श्रद्धाभाव, सौंदर्य के प्रति अकलुषा अंतर्दृष्टि और दलित पीड़ित के प्रति अक्षय संवेदना से मुखर हुई है।७ अज्ञान और दासाता के गहनतम के मध्य निराला भारत की जनता के समक्ष अतीत के गौरवगीतों द्वारा भारत की प्राचीन भव्य दिव्यता को प्रकाशित करने में समर्थ है।

निष्कर्ष –

उपर्युक्त विवेचन के फलस्वरूप मैंने यह अनुभव किया कि निराला ने जनता के मुक्ति के लिए सामाजिक एवं सांस्कृतिक पथों का अन्वेषण किया है। इस अन्वेषण की परिधि में मानवीयता मूलरूप से प्रत्यक्ष हुई है। निराला सचेत और निर्भीक रचनाकार थें उनके निर्भीकता में उनका विद्रोह, संघर्ष और लोक परिवर्तन की गहरी छाप और औचित्य का आग्रह है। डॉ. प्रेमशंकर ने एक सभा के माध्यम से निराला जयन्ती के अवसर पर अपन व्यक्तव्य देते हुए कहा था कि संवेदन के इतने संसार निराला में हैं कि यह देखकर आश्चर्य होता है कि जीवन के कठिनतम संघर्षों के बीच वे इतना कुछ कैसे कर सके। अन्तिम समय तक वे सर्जनरत रहे और साहित्य में अपना आत्मविस्तार करते है। काव्य क्षेत्र में अपनी सघन पहचान के बाद की कथा साहितय में भी पर्याप्त गंभीर दिखाई देते हैं। उनके समग्र साहित्य के अन्तर्गत चाहे वह पद्य या गद्य रहा हो, सभी में सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, मनुष्य का वर्तमान और पारम्परिक संघर्ष जो आने वाले युग का संघर्ष

भी है, समग्र रूप से उनके साहित्य में सन्निहित है।

संदर्भ –

१.महाप्राण निराला : पुनर्मूल्यांकन 'चेतना और बाह्य सत्ता का द्वन्द्व', सम्पादक डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं डॉ. वसुमति डागा, पृष्ठ १८७-१८८.
२.वही, पृष्ठ १८८.
३.निराला का गद्य साहित्य, प्रमिलाविल्ला, पृष्ठ २०६.
४.प्रबन्ध प्रतिमा, निराला, पृष्ठ १६३.
५.निराला रचनावली भाग-६, सनातन धर्म और अछूत, निराला, पृष्ठ ४३४.
६.महाप्राण निराला : पुनर्मूल्यांकन 'निराला की रचनानुभूति की संस्कृति', सम्पादक डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी एवं डॉ. वसुमति डागा, पृष्ठ २७७.
७.निराला और नव जागरण, रामरतन भटनागर, पृष्ठ १४३.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org